## जयपुर के अमरापुर धाम में आयोजित चैत्र मेले में माननीय अध्यक्ष का संबोधन

---

अमरापुर के पवित्र धाम पर स्वामी तेहूराम जी महाराज के दर्शन करने का सौभाग्य मिला। स्वामी सर्वानन्द जी महाराज के दर्शन करने का मौका मिला। सतनाम साक्षी, आयोलाल झूलेलाल, चैत्र मेला 102 की आप सबको लख-लख बधाई।

हम सबके बीच आचार्य पीठाधीश भगत प्रकाश जी महाराज का आशीर्वाद मिला। सभी सन्त, जो अलग-अलग स्थानों पर सेवा का कार्य कर रहे हैं, पुण्यार्थ का काम कर रहे हैं, उन सभी सन्तों को भी मैं प्रणाम करता हूं। यहां पधारे सभी श्रद्धालू, जो देश के अलग-अलग राज्यों से आए हैं, देश के बाहर भी जो पुरुषार्थ से साक्षी नाम तेहूराम जी महाराज के विचारों, जीवन में उनके दिए गए ज्ञान के माध्यम से उस देश में भी सनातन धर्म की रक्षा करने का काम कर रहे हैं।

सन्त साई तेहूराम जी महाराज ने, जो अभी पाकिस्तान का हिस्सा है, उस क्षेत्र के अन्दर समाज में काम किया, अपने ज्ञान से, अपनी तपस्या से, अपनी ऊर्जा से सनातम धर्म की ऐसी संस्कृति और संस्कार दिया, जो सेवा का संस्कार सबके कल्याण का संस्कार है।

स्वामी तेहूराम जी महाराज के उन्हीं विचारों को लेकर स्वामी सर्वानन्द जी महाराज ने अलग-अलग राज्यों के अन्दर जन सेवा, परोपकार सेवा, जन कल्याण के लिए इस अमरापुर आश्रम की स्थापना की।

मुझे खुशी है कि उनके द्वारा दिए गए आध्यात्मिक, धर्म, संस्कृति, विचार आज देश के अन्दर अलग-अलग राज्यों के अन्दर, अलग-अलग जिलों के अन्दर सेवा और पुण्यार्थ का काम कर रहे हैं।

उस समय स्वामी तेहूराम महाराज ने बताया कि व्यक्ति का जीवन परोपकारी होना चाहिए, सहिष्णु होना चाहिए, दया का भाव होना चाहिए, करुणा का भाव होना चाहिए, सत्य का बोध होना चाहिए और मानवता की सेवा ही सबसे बड़ी सेवा है। इस बोध के साथ सिंधी समाज का व्यक्ति जहां भी रहता है, वह वहां इसी तरीके से पुण्य-पुण्यार्थ का काम करता है।

जब भारत का विभाजन हुआ, उस त्रासदी को, उस पीड़ा को, उस दर्द को, उस कष्ट को सबसे ज्यादा सहा तो सिंधी समाज ने सहा है। किस तरीके से आधी रात को अपना सब कुछ छोड़ कर भारत आए और भारत में आ कर अपने पुरुषार्थ से, अपने कठिन परिश्रम से, आध्यात्मिक और धर्म की सेवा के कारण आज देश के अंदर सिंधी समाज एक ऐसा समाज है, जो हर जगह  पुण्यार्थ काम करता है।

मेरा सिंधी समाज से बड़ा नजदीक का लगाव है। हर भूखे को भोजन कराना, हर प्यासे को प्याऊ लगा कर, उसकी प्यास बुझाना, अन्न भण्डार के रूप में सेवा करना, चिकित्सा के रूप में सेवा करना। उस

समय उन्होंने देखा था कि किस तरीके से विभाजन के समय जब दूर-दराज के लोग आते थे तो उनके ठहरने का स्थान नहीं हुआ करता था। उन्होंने सबसे पहले धर्मशाला और आश्रम बनाने का काम किया तो सिंधी समाज ने किया।

एक ऐसा पुरुषार्थ समाज, जो अपना सब कुछ छोड़ कर आया, लेकिन अपने पुरुषार्थ से, अपनी मेहनत से, अपनी लगन से और आध्यात्मिक उदाहरण के कारण उन्होंने भारत में ही नहीं दुनिया के हर देश के अंदर अपना स्थान बनाया है।

आज हमें गर्व है कि सिंधी समाज ने भारत में व्यापार, उद्योग और महिलाओं को कामकाजी बनाना, सिंधी समाज ऐसा समाज है जो कभी भीख मांगते हुए आपको दुनिया और देश के अंदर नहीं दिखेगा। वह अति कड़ी मेहनत के कारण, जब दूर-दराज के गांव के अंदर लोगों को खाने का सामान नहीं मिलता था, तो जंगलों के अंदर साइकिल से, पैदल चल कर उस उपभोक्ता को सस्ता और अच्छा सामान मिले, उसका काम भी सिंधी समाज ने किया।

घर में महिलाओं ने, जो हम आज कह रहे हैं कि लघु एवं कुटीर उद्योग होने चाहिए। उस लघु एवं कुटीर उद्योग के काम की सबसे पहले शुरूआत की है तो सिंधी समाज की महिलाओं ने की है।

महाराज जी, मैं एक लंबा प्रवचन दे सकता हूँ। जितना सिंधी समाज को मैं जानता हूँ, जितना मैंने नज़दीक से देखा है, उनके जीवन को देखा है, उनके त्याग को देखा है, उनकी तपस्या को देखा है, उनके समर्पण को देखा है, निष्ठा को देखा है, ऐसा समाज सभी समाजों के लिए प्रेरणा है।

मुझे एक स्वामी जी हरिद्वार के अंदर मिले थे। वहां उन्होंने कहा कि सबसे बढ़िया घाट बनाया तो सर्वानंद जी महाराज का बनाया है, स्वामी भगत प्रकाश जी ने। वहां भी सेवा, यह अमरापुर का, जयपुर का स्थान, जहां किसी को भोजन नहीं मिलता है, अमरापुर के स्थान पर आ जाएं तो दो टाइम का भोजन मिल जाएगा।

हम भी कई बार यहां पर ठहरे हैं। यहां पर हमें सबसे सस्ता ठहरने का स्थान, अगर सबसे नज़दीक और जयपुर के हृदय के स्थल पर था तो यह अमरापुर का स्थान था। समय बदल गया है, आज आपके यहां, आपके बीच में आया हूँ, कभी यहां पर ठहरता था, यहां का भोजन करता था, लंगर चखता था। उस लंगर में भी समर्पण और सेवा का भाव होता था।

इसी तरीके से हमें भगवान जय झूले लाल जी ने आशीर्वाद दिया है और हम पर उनकी कृपा बनी रहे। देश-दुनिया के अंदर जहां भी सिंधी समाज के लोग रहते हैं, आप इसी पुरुषार्थ, मेहनत, समर्पण, सेवा, त्याग और तपस्या से संपूर्ण समाज का कल्याण करते रहें।

हमारे स्वामी देवीराम जी का यही जीवन था। यही उन्होंने जीवन का दर्शन दिया था। इस दर्शन को हमें आगे लेकर जाना है। आप सबको आज के इस चैत्र मास मेले की लख-लख बधाइयां।

आज मैं देख रहा हूं कि काफी सारे लोग इस हॉल के अंदर हैं, कमरे में हैं, बाहर हैं, चौराहे पर हैं, कोई ऐसा स्थान नहीं है, जहां पर लोग नहीं बैठे हैं। आपकी कृपा इसी तरीके से बना रहे, गुरुओं और संतों का इसी तरीके से आशीर्वाद मिलता रहे।

भारतीय धर्म, संस्कृति, संस्कार को कई बार आक्रमणकारियों ने समाप्त करने का प्रयास किया, लेकिन भारत की धर्म और संस्कृति को कोई समाप्त नहीं कर पाया। उन्होंने जमीन, जायदाद, मकान सहित सब कुछ छोड़ना स्वीकार कर लिया, लेकिन अपने सनातन धर्म से कभी समझौता नहीं किया। इसी तरीके से हम इस भारत को आगे ले जाते रहे।

भारत की धर्म, संस्कृति, आध्यात्मिकता, सहिष्णुता, सबको साथ लेकर चलना, यही हमारी वसुधैव कुटुम्बकम की भावना है। सारा विश्व हमारा परिवार है। इस संस्कृति और संस्कार को आपके नेतृत्व में आगे बढ़ाते रहे। आप सभी को लख-लख बधाइयां।

———